बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 38 ● नई दिल्ली ● सोमवार 17 नवम्बर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

एसआईआर को लेकर 'लठैतवादी दलों का डरना अच्छी बात : केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा है कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर लठैतवादी दलों का डरना अच्छी बात है। उपमुख्यमंत्री मौर्य ने समाजवादी पार्टी (सपा) का नाम लिए बगैर इशारों में हमला करते हुए कहा है कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया शुरू होने के बाद 'लठैतवादी दलों में जो घबराहट दिख रही है, वह लोकतंत्र के लिए अच्छी बात है। केशव प्रसाद मौर्य ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट करते हुए कहा कि 'लठैतवादी दलों को मतदाता सूची के विशेष गहन पुनर्निरीक्षण (एसआईआर) से डरना अच्छी बात है।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस-2025- प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और एक्रेडिटेड जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ने भव्य समारोह में वरिष्ठ पत्रकारों को किया सम्मानित

नई दिल्ली, (ए.के चौधरी) राष्ट्रीय प्रेस दिवस-2025 के अवसर पर एक्रेडिटेड जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन और प्रेस क्लब ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित भव्य राष्ट्रीय समारोह प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। देशभर से आए वरिष्ठ पत्रकारों, मीडिया विशेषज्ञों और विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को ऐतिहासिक बना दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई, जिसके बाद मुख्य अतिथियों ने मीडिया की भूमिका और चुनौतियों पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

मुख्य अतिथि श्री स्वदेश भूषण ने कहा,पत्रकारिता का मूल स्वभाव सत्य की खोज है। डिजिटल युग में यह जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, क्योंकि सूचना सिर्फ तेज नहीं, सटीक भी होनी चाहिए।

श्री के. शिवकुमार ने कहा,

आज पत्रकारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती विश्वसनीयता बनाए रखने की है। तकनीक सहायता करती है, लेकिन पत्रकार का विवेक ही उसके काम को दिशा देता है।

श्री सुधीर महाजन (सें.नि. IAS) ने कहा,लोकतंत्र तभी मजबूत बनता है जब पत्रकारिता निष्पक्ष और निर्भीक हो। मीडिया राष्ट्र का दर्पण भी है और दिशा देने वाली शक्ति भी।

श्री अनिल कुमार सक्सेना (IIS) ने कहा, पत्रकारिता केवल पेशा नहीं बल्कि जनसेवा का माध्यम है। हमें वही सूचना समाज तक पहुंचानी चाहिए जो राष्ट्रहित को सशक्त करे।

एक्रेडिटेड जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री विजय शंकर चतुर्वेदी ने कहा, राष्ट्रीय प्रेस दिवस केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मावलोकन का अवसर है। यही पत्रकारिता की असली शक्ति है।

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के महासचिव श्री नीरज ठाकुर ने कहा,

तेजी से बदलते मीडिया परिदृश्य में पत्रकारों को डिजिटल मीडिया, डेटा पत्रकारिता और तकनीकी दक्षता के साथ आगे बढ़ना होगा।

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के अध्यक्ष श्री गौतम लाहिरी ने बोले,

मीडिया की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है। पत्रकारों का निर्भीक होना ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

कार्यक्रम का सबसे विशेष आकर्षण था–देशभर के प्रतिष्ठित पत्रकारों का सम्मान।सम्मानित पत्रकारों में शामिल रहे–श्री दिलबर गोठी, श्री संजीव उपाध्याय, श्री राकेश थापलियाल, श्री राम दास, श्री मानस बनर्जी, श्री सुशील झलानी, श्री गुरु बसावैया, श्री शिकोह आज़ाद, सुश्री विनीता यादव, श्री कृष्ण कुमार तिवारी, मोहम्मद इलियास, श्री सुशील कुमार, डॉ. सुनील पराशर, श्री सुनील शर्मा, श्री विजय कुमार भारती,संपादक, अशोका एक्सप्रेस, श्री राहुल शर्मा, श्री ओ.पी. गौतम, श्री जे. पी, जिंदल,संपादक सहित कई अन्य वरिष्ठ पत्रकार।

कार्यक्रम का संचालन Eminent Journalist श्री संजीव उपाध्याय ने किया, जिनकी प्रभावशाली एंकरिंग ने समारोह को गरिमामय बनाया।

कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में श्री जगन नेगी और श्री अनिल मंचंदा का सराहनीय योगदान रहा, जिन्होंने पूरे आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों, पत्रकारों और सहयोगियों के प्रति महासचिव श्री कोड़ले चन्नप्पा ने हार्दिक आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय प्रेस दिवस-2025 का यह भव्य आयोजन पत्रकारिता की स्वतंत्रता, निष्पक्षता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्धता का सशक्त संदेश देकर संपन्न हुआ।

यह कार्यक्रम सभी उपस्थितों के लिए प्रेरणादायी और स्मरणीय साबित हुआ।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष का बड़ा आरोप, अमित शाह के होटल से बुलाकर ऑब्जर्वर से कराया बिहार चुनाव में खेल

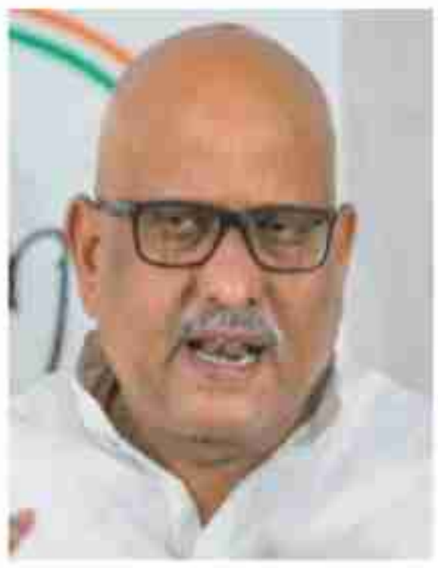

बागपत।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बिहार चुनाव को लेकर भाजपा और चुनाव आयोग पर संगठित वोट चोरी का बड़ा आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि बिहार में 65 लाख वोट काटे गए और जिस होटल में वह रुके थे, उसी की दूसरी विंग में अमित शाह ठहरे थे, जहां से गुजरात के ऑब्जर्वर को बुलाकर पूरा खेल कराया गया।

बड़ौत में दिल्ली रोड स्थित कांग्रेस कार्यालय में कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान अजय राय ने कहा कि लोकतंत्र पर खुला हमला हो रहा है।

थानों, ब्लॉक और बिजली विभाग में दलाली चल रही है, फर्जी मुकदमे दर्ज कर जनता को परेशान किया जा रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा पर उन्होंने सरकार को घेरते हुए कहा कि दिल्ली से लेकर पुलवामा, उरी और पठानकोट तक हुए हमलों में सरकार आज तक यह नहीं बता पाई कि आरडीएक्स कहां से आया, जबकि यूपी के कई जवान शहीद हुए, परिवारों को मदद तक नहीं मिली।

किसानों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 400 रुपये का गन्ना भाव सिर्फ दिखावा है, भुगतान रुका है और किसान परेशान हैं। सोनभद्र हादसे पर अजय राय ने कहा कि अवैध खनन की जिम्मेदारी सरकार की है, क्योंकि मुख्यमंत्री मौके पर मौजूद थे। उन्होंने मृतक परिवारों को एक करोड़ रुपये और सरकारी नौकरी और जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि 2027 चुनाव की तैयारी जारी है, लेकिन लोकतंत्र बचाना है तो जनता को हमारे साथ खड़ा होना पड़ेगा।

दिल्ली ब्लास्ट मामले में 6 राज्यों तक मिले डॉक्टरों के टेरर नेटवर्क के तार, एनआईए कर रही छापेमारी

नई दिल्ली।

डॉक्टरों के टेरर नेटवर्क पर एनआईए ने शिकंजा कस दिया है. जम्मू कश्मीर समेत 6 राज्यों तक अब तक जांच पहुंच चुकी है. पंजाब, यूपी, हरियाणा, मध्य प्रदेश,दिल्ली और जम्मू कश्मीर में जांच जारी है. एनआईए की टीमें लगातार छापेमारी कर रही हैं. एनआईए के डीजी सदानंत दाते खुद जांच की कमान संभाल रहे हैं. एनआईए डीजी श्रीनगर में इस समय हैं. श्रीनगर में डॉक्टर आदिल, डॉक्टर मुजम्मिल, डॉक्टर शाहीन और बाकी आरोपियों से एनआईए पूछताछ कर रही है. आज जीएमसी अनंतनाग में अंतिम वर्ष की छात्रा हरियाणा की डॉ. प्रियंका शर्मा को भी पुलिस ने पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है. वह रोहतक की निवासी हैं. सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि क्या उनका डॉ. अदील या डॉ. उमर से कोई संबंध था.

एनआईए के डीजी सदानंत दाते खुद जांच की कमान संभाल रहे हैं. एनआईए डीजी श्रीनगर में इस समय हैं. श्रीनगर में डॉक्टर आदिल, डॉक्टर मुजम्मिल, डॉक्टर शाहीन और बाकी आरोपियों से एनआईए पूछताछ कर रही है.

ये अन्य डॉक्टर हिरासत में

अब तक 15 से ज्यादा डॉक्टर हिरासत में हैं. दर्जनों डॉक्टर एजेंसी के रडार पर हैं. बड़ी संख्या में डॉक्टरों को सोशल मीडिया ग्रुप्स में जोड़कर रेडीकिलाइज़ किया गया. अब तक डिटेन किए गए डॉक्टर बंगाल के दिनाजपुर से अल फलाह यूनिवर्सिटी के डॉक्टर निसार आलम, मध्य प्रदेश के बुरहानपुर से एक डॉक्टर, मेवात से तीन डॉक्टर, सुनेहरा गांव (फिरोज़पुर झिरका) का डॉ. मुश्तकीम (जो चीन से एमबीबीएस पूरा करके लौटा है और अल-फलाह मेडिकल कॉलेज में इंटर्नशिप कर रहा है), अहमदबस गांव का डॉ. मोहम्मद, डॉ. रेहान हयात (जिसने अल-फलाह से एमबीबीएस करने के बाद अब ताव्डू के एक निजी अस्पताल में काम करना शुरू किया है), पठानकोट से अल फलाह यूनिवर्सिटी का पूर्व डॉक्टर रईस अहमद भट्ट (इसने अल-फलाह यूनिवर्सिटी में 2020- 21 में काम किया), यूपी के हापुड़ से डॉक्टर फारूक (जो जीएस मेडिकल कॉलेज में पढ़ा रहा है व उसने अल-फलाह यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की है और जम्मू कश्मीर का रहने वाला है), कानपुर से कार्डियोलॉजिस्ट आरिफ (जो अनंतनाग का रहने वाला है और डॉक्टर शाहीन का काफी करीबी है. शाहीना उसके साथ 2006 से 2016 तक काम कर चुकी है), डॉक्टर परवेज को लखनऊ से (जो शाहीना का भाई है), फरीदाबाद से अल-फलाह यूनिवर्सिटी का डॉक्टर फहीम सहित अल-फलाह यूनिवर्सिटी के कई और डॉक्टर और स्टाफ मेंबर शामिल हैं.

शाहीन भाग रही थी विदेश

सूत्रों के मुताबिक, शाहीन हाल ही में अपना पासपोर्ट बनवाने की कोशिश कर रही थी. पुलिस ने उसके पासपोर्ट के लिए वेरिफिकेशन भी किया था. यही वजह है कि जांच एजेंसियों को आशंका है कि वह धमाके की साजिश के बाद विदेश भागने की फिराक में थी.पुलिस वेरिफिकेशन के दौरान ली गई शाहीन की तस्वीर भी सामने आई है. एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि पासपोर्ट बनवाने के पीछे उसका मकसद क्या था और क्या यह धमाके की साजिश से जुड़ा हुआ है. दिल्ली के लाल किला के पास हुए आतंकी विस्फोट मामले में जैसे-जैसे जांच बढ़ती जा रही है, ''सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल की असली सचाई भी सामने आ रही है.

तेजप्रताप बोले- एक इशारा..... जयचंदों को जमीन में गाड़ देंगे

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों के एक दिन बाद लालू यादव के परिवार में फूट खुलकर सामने आ गई. उनकी बेटी रोहिणी आचार्य ने न सिर्फ राजनीति छोड़ने का ऐलान किया बल्कि अपने परिवार से भी नाता तोड़ने का ऐलान कर दिया. अब उनके भाई तेज प्रताप यादव उनके समर्थन में आ गए हैं. उन्होंने रोहिणी आचार्य के कथित विरोधियों को चेतावनी दे डाली है. तेज प्रताप यादव ने लिखा, कल की घटना ने दिल को भीतर तक झकझोर दिया है.मेरे साथ जो हुआ, वह मैं सह गया। लेकिन मेरी बहन के साथ जो अपमान हुआ, वह किसी भी हाल में असहनीय है. सुन लो जयचंदो– परिवार पर वार करोगे तो बिहार की जनता तुम्हें कभी माफ नहीं करेगी. जबसे मेरी रोहिणी बहन के चप्पल उठाने की खबर सुनी, दिल की आहत अब अग्नि बन चुकी है. जब जनमानस की भावनाएँ आहत होती हैं, तो बुद्धि पर पड़ी धूल उड़ जाती है. इन चंद चेहरों ने तेजस्वी की भी बुद्धि पर परदा डाल दिया है. इस अन्याय का परिणाम बेहद भयावह होगा. समय का लेखा-जोखा बड़ा कठोर है. तेज प्रताप यादव ने ये भी कहा, मैं आरजेडी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मेरे पिता, मेरे राजनीतिक गुरु लालू प्रसाद यादव जी से आग्रह करता हूं पिता जी, एक संकेत दीजिए, आपका केवल एक इशारा, और बिहार की जनता इन जयचंदों को जमीन में गाड़ देने का काम खुद कर देगी. यह लड़ाई किसी दल की नहीं परिवार के सम्मान, बेटी की गरिमा और बिहार के स्वाभिमान की लड़ाई है.

वीरांगना ऊदा देवी को सीएम योगी ने किया नमन, कहा- अंग्रेजों के दांत खट्टे कर देने वाली शहीद शहीद, हर हिंदुस्तानी के लिए प्रेरणा हैं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के दांत खट्टे कर देने वाली शहीद ऊदा देवी को नमन करते हुए रविवार को कहा कि वीरांगना ऊदा देवी न केवल नारी जाति के लिए बल्कि हर हिंदुस्तानी के लिए एक प्रेरणा हैं। योगी आदित्यनाथ ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ रविवार को यहां सेक्टर-19 वृंदावन कॉलोनी, पासी चौराहे पर वीरांगना ऊदा देवी पासी की प्रतिमा का अनावरण और स्वाभिमान समारोह का उद्घाटन करने के बाद कहा, नारी और वंचित का सम्मान 'डबल इंजन सरकार का मुख्य ध्येय है और वीरांगना ऊदा देवी हमें याद दिलाती हैं कि नारी शक्ति कितनी सामर्थ्यवान है। उन्होंने कहा, वीरांगना ऊदा देवी न केवल नारी जाति के लिए बल्कि हर हिंदुस्तानी के लिए एक प्रेरणा हैं। इसलिए इस अवसर पर मैं उनकी स्मृतियों को नमन करता हूं। उन्होंने

विदेशी हुकूमत की चूलों को हिलाने और अत्याचार का जवाब देने के लिए 16 नवंबर 1857 को उन्होंने 36 अंग्रेज सैनिकों को ढेर कर दिया। उनका नाम भारत के इतिहास में अमर हो गया। योगी ने कहा कि वीरांगना ऊदा देवी का बलिदान हमें यह प्रेरणा देता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने भारत माता के हर सपूत को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया है। अगर आप बेसिक शिक्षा परिषद की पुस्तकों को देखें तो एक अतिरिक्त पुस्तक जिला, क्षेत्र और प्रदेश स्तर पर उपलब्ध कराई गई है, ताकि वर्तमान पीढ़ी अपने इतिहास को जान सके। उन्होंने कहा कि 62 जिलों में 109 सर्वोदय विद्यालय की स्थापना का कार्य या संपन्न हो चुका है या कार्य मजबूती से आगे बढ़ रहा है। यहां आश्रम पद्धति के अनुरूप छात्र-छात्राओं को रहने की व्यवस्था है। 18 आवासीय विद्यालय श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने के लिए मंडल मुख्यालयों पर निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि राय सरकार ने दो लाख 19 हजार पुलिसकर्मी की भर्ती आठ वर्ष में की और अनिवार्य रूप से 20 प्रतिशत महिलाओं की भर्ती अनिवार्य की। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, केन्द्रीय ग्रामीण राज्य मंत्री कमलेश पासवान, विधान परिषद सदस्य रामचंद्र प्रधान ने भी समारोह को संबोधित किया। पासवान ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री से पासी समाज का इतिहास पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग भी की।

क्या धर्मेंद्र प्रधान की लगेगी लॉटरी ?

त्रिदीब रमण

इस बार के बिहार विधानसभा चुनाव में चमत्कार को नमस्कार है! खुद भाजपा व संघ वालों को भी इस बात का इल्म नहीं था कि एनडीए को इस बार बिहार में इतनी बंपर जीत मिलेगी कि सफलता का आंकड़ा दो सौ को भी पार कर जाएगा। मोदी व शाह के बाद इस चुनाव में भाजपा के जो दो नेता सबसे ज्यादा एक्टिव दिखे, वे हैं केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और सीआर पाटिल। धर्मेंद्र प्रधान के पास न केवल भाजपा को चुनाव में संभालने की जिम्मेदारी थी, बल्कि उन्हें एनडीए के घटक दलों में आपसी तालमेल बिठाए रखने का जिम्मा भी सौंपा गया था, वहीं सीआर पाटिल के पास चुनाव के 'मैक्रो मैनेजमेंट' की जिम्मेदारी थी, साथ ही उनके पास ही बूथ मैनेजमेंट की भी अहम जिम्मेदारी थी। प्रधान का बिहार कनैक्शन सर्वप्रथम 2010 में बना था, जब वे बिहार के भाजपा प्रभारी बनाए गए थे। फिर अचानक एकदम से उन्हें इस बार चुनाव से ऐन पहले सितंबर 2025 में भाजपा ने बिहार चुनाव का प्रभारी बना दिया। अब से पहले इस काम को विनोद तावड़े अंजाम दे रहे थे। प्रधान को भाजपा चाणक्य अमित शाह के बेहद भरोसेमंदों में शुमार किया जाता है। 2010 में जब धर्मेंद्र प्रधान को भाजपा ने बिहार का प्रभारी बनाया तब उस चुनाव में एनडीए की रिकार्ड तोड़ 206 सीटें आई थीं, इसके बाद 2012 में प्रधान को बिहार से ही राज्यसभा में भेज दिया गया था। उन्हें जिन चुनावों की पार्टी ने महती जिम्मेदारी सौंपी वे वहां कमल खिलाने में कामयाब रहे। हालिया दिनों में उन्हें ओडिशा और हरियाणा का प्रभार सौंपा गया था, इत्तफाक से इन दोनों ही राज्यों में भाजपा की विजय ध्वज फहरा गई। सो भाजपा शीर्ष ने बिहार चुनाव की पूर्व संध्या पर उन्हें बेहद उम्मीदों के साथ बिहार भेजा था और प्रधान इस कसौटी पर खरे उतरे। भाजपा से जुड़े सूत्र बताते हैं कि अगर सब कुछ भाजपा शीर्ष के उम्मीदों के अनुरूप चला तो कोई आश्चर्य नहीं कि आने वाले नए साल में धर्मेंद्र प्रधान के रूप में भाजपा को अपना नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिल जाए।'

अब बात सीआर पाटिल की

इस बार बिहार विधानसभा चुनाव के 'मैक्रो मैनेजमेंट' की जिम्मेदारी पार्टी ने केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल को सौंपी, जो गुजरात के पाटीदार समुदाय से ताल्लुक रखते हैं, वे हैं तो मूलतः महाराष्ट्र के जलगांव के, पर इनकी राजनीतिक कर्मभूमि गुजरात रही है। इन्हें चुनावी 'मैक्रो व माइक्रो मैनेजमेंट' का मास्टर माना जाता है, सो संगठनात्मक कार्यों में भी ये उतने ही दक्ष हैं। बिहार में इन्होंने अपनी पहचान एक कुर्मी नेता के तौर पर स्थापित की। पार्टी में इन्हें मोदी व शाह दोनों का ही बेहद भरोसेमंद माना जाता है, इससे पहले ये 2015 में बिहार में काम कर चुके थे। सो इस बार उन्हें भी चुनाव की ऐन बेला में धर्मेंद्र प्रधान के साथ सितंबर 2025 में सह प्रभारी बनाकर बिहार भेजा गया। इसके अलावा पाटिल को बूथ मैनेजमेंट में भी दक्षता हासिल है, बिहार में सुचारू व आत्मगत बूथ मैनेजमेंट करने के लिए ये गुजरात से पार्टी कार्यकर्ता लेकर आए थे। धर्मेंद्र प्रधान के समानांतर किसी पार्टी नेता का कद बिहार चुनाव के बाद इस कदर अभ्युदित हुआ है तो वे हैं सीआर पाटिल। सो निकट भविष्य में इनके कद में भी और इजाफा हो सकता है।

अपने गढ़ में ही क्यों हार गए उमर?

इस उप चुनाव में उमर अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस को अपने गढ़ बड़गाम में ही मुंह की खानी पड़ी है, ऐसा लगता है कि महबूबा मुफ्ती की पीडीपी ने उमर के हाथों से यह निवाला छीन लिया है। सनद रहे कि श्रीनगर के बाहरी इलाके में स्थित बड़गाम हमेशा से फारूक अब्दुल्ला परिवार के नेशनल कॉन्फ्रेंस के एक मजबूत गढ़ में शुमार रहा है। इस बार 1977 के बाद पहली बार एनसी ने यह सीट गंवाई है। वह भी उस सूरत में जबकि इस बार बड़गाम उप चुनाव को उमर अपनी नाक का सवाल बना चुके थे और पूरे चुनाव प्रचार का नेतृत्व भी वे स्वयं कर रहे थे। आम तौर पर देखा गया है कि उप चुनाव की सीट अमूमन सत्तारूढ़ पार्टी के हक में जाती है। सनद रहे कि उमर ने इस दफे के चुनाव में दो सीटों पर अपनी जीत दर्ज की थी, इसमें से एक सीट थी बड़गाम। इस बार पीडीपी ने अब्दुल्ला परिवार से यह सीट छीन कर फिर से 2002 की वह यादें ताजा कर दी हैं जब उमर अपने परिवार की परंपरागत गंदरबल सीट से भी चुनाव हार गए थे। उमर को अभी अपनी पार्टी में ही कई मोर्चों पर जूझना पड़ रहा है, श्रीनगर के मौजूदा एनसी सांसद रूहुल्ला के बागी तेवरों से उमर की परेशानियों पर बल हैं। भाजपा व केंद्र सरकार के प्रति उमर के लचीले रवैये ने कश्मीरी जनता के मन में संदेह के नए बीज पैदा कर दिए हैं, शायद इसी बात की कीमत उमर को आगे भी चुकानी पड़ सकती है।

जाने पीके का क्या होगा आगे

नेपथ्य के रचे स्वांगों और नए सियासी शंखनाद से बिहार में अपनी नई पारी के आगाज़ का दंभ भरने वाले पीके यानी प्रशांत किशोर और उनकी नवसृजित जनसुराज पार्टी का अब क्या होगा? वह भी वैसी सूरत में जबकि उनकी पार्टी बिहार में कुल 2 फीसदी वोट शेयर नहीं ला पाई हो और उनके कुल 238 में से 236 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो चुकी हो। वैसे भी पीके ने चुनाव से पहले ही यह कहकर अपने लिए 'एक्जिट विंडो' तैयार कर रखी थी कि अगर नीतीश कुमार की जदयू को इस चुनाव में 25 से ज्यादा सीटें आ गई तो वे राजनीति छोड़ देंगे। पीके अपने हर इंटरव्यू में कहते रहे कि उनकी पार्टी इन चुनावों में अर्श पर होगी या फर्श पर। बकौल पीके- 'जन सुराज की सीटें या तो 170 के पार होंगी या फिर हम 10 से नीचे रह जाएंगे।' वहीं इन बातों से बेखबर पीके अपना बोरिया-बिस्तर समेट चेन्नई की फ्लाइट पकड़ने को बेकरार हैं, जहां तमिलनाडु चुनाव में वे एक्टर विजय को बतौर चुनावी रणनीतिकार अपनी सेवाएं दे सकते हैं। इस बारे में विजय से पूर्व में उनकी कई मुलाकातें भी हो चुकी हैं।

और अंत में

इस दफे के बिहार विधानसभा चुनाव में चिराग पासवान, जीतन मांझी व उपेंद्र कुशवाहा के साथ आने से माना जाता है कि कम से कम 42 सीटों पर नीतीश कुमार की जदयू को इसका फायदा मिला है। 2020 के मुकाबले भाजपा की सीटें तो 12 के आसपास बढ़ी, पर भाजपा पार्टी की जीत का स्ट्राइक रेट 88 फीसदी के पार चला गया। नीतीश की सीटें लगभग डबल हो गईं। चिराग की जीती सीटें डेढ़ दर्जन के आसपास पहुंच गई, मांझी और कुशवाहा की भी बल्ले-बल्ले हो गई। पर अब यह कोई नहीं पूछ रहा कि मल्लाह वोट एनडीए के साथ ही क्यों चला गया? महागठबंधन के उप मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार मुकेश सहनी अपनी जीत का खाता भी क्यों नहीं खोल पाए? क्या महागठबंधन ने सहनी को लेकर अपना होम वर्क ठीक से नहीं किया था?

सम्पादकीय...

बगावत की चिंगारी

बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्ट्राइक रेट का 90फीसदी से ऊपर रहना संगठनात्मक पराक्रम का भी परिणाम है। चुनाव से पहले के हालात पर गौर करें तो नीतीश कुमार के खिलाफ एंटी-इनकम्बेंसी को खत्म करना सबसे बड़ी चुनौती थी। साथ ही गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे और सबको साथ लेकर चलने की चुनौती भी थी। ऐसे में अमित शाह ने यह जिम्मेदारी अपने हाथ में ली। बिहार में अमित शाह ने 4-5 महीने पहले ही मोर्चा संभाल लिया था। अमित शाह के कमान संभालने के बाद भाजपा और सहयोगियों के बीच कई दौर की वार्ता हुई। अमित शाह JD(U), LJP (RV), RLSP और HAM को एक मंच पर लेकर आये। सीट-दर-सीट जातीय समीकरण का सटीक विश्लेषण किया गया और संभावित विवादों को समय रहते शांत किया गया। यह वह काम है जो सामान्यतः चुनाव घोषित होने के बाद शुरू होता है लेकिन अमित शाह ने महीनों पहले इसकी नींव तैयार कर दी थी। देखा जाये तो अमित शाह का चुनावी अभियान केवल मंच के भाषणों तक सीमित नहीं होता। उनकी शैली हमेशा जमीनी संरचना को मजबूत करने पर आधारित होती है। 5 जिला स्तरीय संगठन बैठकें, 5 क्लस्टर स्तर की बैठकें, 35 विशाल रैलियाँ, 1 महत्वपूर्ण रोड शो और और हर दौरे पर कोर ग्रुप के साथ बैठकें की गयीं। इस दौरान अमित शाह लगातार एक ही बात दोहराते रहे कि बूथ जीते बिना चुनाव नहीं जीता जाता। उनका यह फोकस बालू की दीवार को भी कंक्रीट का किला बना देता है। अमित शाह की निगरानी में बिहार में भाजपा का बूथ नेटवर्क तगड़ा हुआ और परिणाम सामने आया– प्रचंड जनादेश। इसके अलावा, बिहार के दरभंगा जिले की अलिनगर विधानसभा सीट अचानक राष्ट्रीय सुर्खियों का केंद्र बन गई थी जब भाजपा ने यहाँ से लोकप्रिय मैथिली लोकगायिका मैथिली ठाकुर को उम्मीदवार बनाकर एक साहसी राजनीतिक दांव खेला था। हालांकि यह दांव जितना आकर्षक था, उतना ही जोखिमभरा भी क्योंकि जमीनी स्तर पर तुरंत असंतोष की लहर उठी। वर्षों से पार्टी के प्रति निष्ठावान कार्यकर्ता खुद को उपेक्षित महसूस करने लगे और कई ने बगावत की चेतावनी दे दी। स्थिति ऐसी थी कि यह प्रयोग भाजपा के लिए आत्मघाती भी साबित हो सकता था। लेकिन राजनीति में संकट वहीं खत्म होता है जहाँ अमित शाह का प्रवेश होता है। चुनावी अभियानों के महारथी, संघटनात्मक इंजीनियरिंग के सिद्धहस्त और आधुनिक भारतीय राजनीति के अजेय रणनीतिकार, अमित शाह ने एक बार फिर दिखा दिया कि उन्हें यूं ही भाजपा का 'चाणक्य' नहीं कहा जाता। हम आपको बता दें कि अलिनगर उन सीटों में से थी जिन्हें भाजपा पारंपरिक रूप से अनुकूल नहीं मानती। मैथिली ठाकुर जैसे युवा चेहरे को उतारना प्रधानमंत्री मोदी के उस बड़े प्रयोग का हिस्सा था जिसमें वह पार्टी में युवाओं, कलाकारों और नई पीढ़ी को निर्णायक भूमिका में लाना चाहते हैं। लेकिन पुराने कार्यकर्ताओं की नाराजगी ने स्थिति को नाजुक बना दिया। यहीं अमित शाह ने अपनी विशिष्ट शैली में कमान संभाली। उन्होंने थकान को दरकिनार करते हुए एक के बाद एक फोन कॉल किए, हर 'आक्रोशित' नेता को शांत किया, हर असंतुष्ट कार्यकर्ता को सुना और धीरे-धीरे बगावत की आग को पूरी तरह शांत कर दिया। यह वही हस्तक्षेप था जिसने मैथिली ठाकुर के लिए रास्ता साफ किया। पार्टी के दिल्ली और पटना दोनों ही धड़ों में यह स्वीकार किया गया कि अलिनगर की ऐतिहासिक जीत अमित शाह की अथक मेहनत और उनके अद्वितीय संकट प्रबंधन क्षमता का परिणाम थी। बात सिर्फ अलिनगर की भी नहीं है क्योंकि रूठों को मनाने और असंतुष्टों को समझाने का काम अमित शाह ने पूरे बिहार में किया। उन्होंने बगावत की चिंगारी को बुझा दिया और बहुमत की ज्वाला पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनाव प्रचार के पूरे अभियान के दौरान अमित शाह ने अलग-अलग महत्वपूर्ण बैठकों, संवादों और रणनीतिक हस्तक्षेपों के माध्यम से न सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया, बल्कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति राजनीतिक सद्भावना को भी सार्थक दिशा दी। देखा जाये तो अमित शाह की चुनावी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह रणनीति को तीन आयामों में रखते हैं– संगठन, समान, और संदेश। यही भाजपा का वह मॉडल है जिसने उसे बार-बार कठिन इलाकों में जीत दिलाई है। देखा जाये तो चुनाव सिर्फ प्रचार से नहीं जीते जाते। चुनाव जीते जाते हैं संयम, संवाद, रणनीति और समय पर लिए गए सटीक निर्णयों से। यह जीत बताती है कि असंतोष चाहे कितना भी गहरा हो, संगठनात्मक नियंत्रक की भूमिका में अमित शाह अतुलनीय हैं। युवा चेहरों को आगे लाने का मोदी- शाह मॉडल सिर्फ प्रयोग नहीं, यह भविष्य की राजनीति का रोडमैप है। भाजपा अब सिर्फ परंपरागत समीकरणों पर नहीं, बल्कि नए सामाजिक-राजनीतिक प्रयोगों पर खड़ी एक गतिशील पार्टी बन चुकी है। अमित शाह भले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं हैं, लेकिन पार्टी आज भी हर बड़ी चुनावी लड़ाई में उनके नेतृत्व-क्षमता पर ही निर्भर रहती है। वह महाराष्ट्र, हरियाणा और दिल्ली में भी कठिन परिस्थितियों को अवसरों में बदल चुके हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत है– राजनीति को भावना नहीं, प्रणाली के तौर पर देखना। अगला चुनावी युद्धक्षेत्र पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु है। प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा कर दी है कि बंगाल के जंगलराज को समाप्त करना है। माना जा रहा है कि अमित शाह अब बंगाल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। क्योंकि जहाँ मोदी जन-भावना जगाते हैं, वहाँ शाह जन-भावना को संरचना में बदलते हैं। बहरहाल, यदि राजनीति एक विद्या है, तो अमित शाह उस विद्या के अधिष्ठाता हैं। रणकौशल, बुद्धि और संगठनात्मक कठोरता के अद्वितीय संयोजन के साथ। अमित शाह की राजनीति आधुनिक चाणक्य की तरह निर्णायक और परिणाम-केंद्रित है।

अब वादे भी पूरे होंगे कि नहीं?

बिहार की जनता ने अपनी बात कह दी है। एन.डी.ए. को 202 सीटें और महागठबंधन को 35 सीटें मिली हैं। सभी नागरिकों को इस फैसले को स्वीकार करना होगा। नई सरकार, चाहे मुख्यमंत्री कोई भी हो, हमारी शुभकामनाओं की हकदार है क्योंकि हमारी शुभकामनाओं की सबसे ज्यादा हकदार बिहार की जनता है। बिहार चुनावों की कवरेज में मीडिया ने खुद को गौरवान्वित नहीं किया। कुछ मीडिया संस्थान (अखबार और टैलीविजन चैनल) जिन्होंने थोड़ा अलग रास्ता अपनाया था वे भी इस भीड़ में शामिल हो गए। जमीनी स्तर पर मौजूद पत्रकार एक स्वर में बोल रहे थे कि लोग जाति के आधार पर वोट कर रहे हैं। नीतीश कुमार के खिलाफ कोई सत्ता-विरोधी लहर नहीं है। तेजस्वी यादव ने अभियान में ऊर्जा जरूर दिखाई लेकिन अपने पारंपरिक आधार से आगे अपनी अपील का विस्तार नहीं कर पाए। प्रशांत किशोर ने मतदाताओं के सामने नए विचार रखे लेकिन उन्हें एक नौसिखिया और अप्रमाणित माना जा रहा है। नरेंद्र मोदी का मतदाताओं से तुरंत जुड़ाव है। राहुल गांधी वोट चोरी और बेरोजगारी वगैरह-वगैरह जैसे अपने मुख्य मुद्दों पर अड़े रहे। एकमात्र नया गाना था 'दस हजारी' (मतदान से पहले, मतदान के दौरान और मतदान के बाद हर घर की एक महिला को 10,000 रुपये का नकद हस्तांतरण)। सबसे निचले पायदान पर - बिहार के लोगों की याददाश्त बहुत तेज है। उन्हें लालू प्रसाद (या उनकी पत्नी) की 15 साल की सरकार (1990-2005) याद है और उन्होंने तेजस्वी यादव को गलत तरीके से दोषी ठहराया जो उस सरकार के सत्ता से बाहर होने के समय मुश्किल से 16 साल के थे। उन्होंने नीतीश कुमार (या उनके प्रतिनिधि) की 20 साल की सरकार को भी याद किया लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन्हें कई नाकामियों से कोई नाराजगी नहीं है। क्या बिहार गरीब है? क्या बड़े पैमाने पर बेरोजगारी है? करोड़ों लोग रोजगार की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं? क्या बहुआयामी गरीबी लोगों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित कर रही है? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की स्थिति भयावह है? 'निषेध' के बावजूद क्या शराब खुलेआम उपलब्ध है? प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हां' है। यदि ऐसा है तो इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि लोगों ने हाल ही में संपन्न चुनावों में जिस तरह से मतदान किया, उसी तरह से मतदान क्यों किया। एक कॉलम में शेखर गुप्ता ने व्यंग्यात्मक रूप से लिखा कि 'बिहार आज जो सोचता है, बिहार परसों भी वही सोचता था'। बहरहाल, शायद कुछ कारण थे जो चुनाव बाद के सर्वेक्षणों में सामने आएंगे। मैं बिहार के लोगों से चंपारण युग की भावना को पुन खोजने का आग्रह करता हूं। छात्रों को अयोग्य शिक्षकों,शिक्षकों, पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं से रहित कॉलेजों-स्कूलों, पेपर लीक, परीक्षाओं में सामूहिक नकल, हेर-फेर किए गए परिणाम, बेकार डिग्रियां और हास्यास्पद सार्वजनिक सेवा भर्ती को दयापूर्वक बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। युवाओं को चुपचाप अपने राज्य में नौकरियों की कमी को स्वीकार नहीं करना चाहिए और ऐसे राज्य में किसी भी नौकरी के लिए लंबी दूरी तय नहीं करनी चाहिए जहां के लोग, भाषा, भोजन और संस्कृति उनके लिए अजनबी हों। माता-पिता और परिवारों को यह भाग्यवादी रूप से स्वीकार नहीं करना चाहिए कि पुरुष अपने रिश्तेदारों के साथ नहीं रहेंगे। बिहार के लोगों को अब अपने पिता और दादी की तरह नहीं रहना चाहिए। संगठन ही कुंजी है - स्पष्टतः, विपक्षी राजनीतिक दल लोगों के सामने एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और परिवर्तन की इच्छा जगाने में विफल रहे। प्रशांत किशोर ने ऐसा करने की कोशिश की लेकिन वे कई कमियों से ग्रस्त थे। अगर यह सच है तो दोष पूरी तरह से विपक्षी राजनीतिक दलों का है। योग्य नेताओं और संसाधनों का होना ही पर्याप्त नहीं है, उनके पास जमीनी स्तर पर लाखों पैर और एक मजबूत संगठन होना चाहिए। पार्टी के नेताओं या उम्मीदवारों से ज्यादा, पार्टी संगठन और कार्यकर्ता ही चुनाव जीतते हैं। एक नियम के रूप में (दुर्लभ अपवादों को छोड़कर) हर चुनाव एक पार्टी या पार्टियों के गठबंधन द्वारा जीता जाता है, जिसके पास संगठनात्मक शक्ति होती है जो मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित करती है। परिणामों को देखते हुए, ऐसा लगता है कि बिहार में भाजपा और उसके बाद जद-यू के पास वह संगठनात्मक शक्ति थी। जिम्मेदारी कहां है - भारत के चुनाव आयोग की भूमिका संदिग्ध रही। बिहार चुनावों की पूर्व संध्या पर, इसने मतदाता सूचियों के विवादास्पद विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा की। केवल बिहार में और बहस को मोड़ दिया। मतदान प्रतिशत में वृद्धि आंशिक रूप से इसलिए हुई क्योंकि मतदाता सूचियों में कुल मतों की संख्या कम थी। चुनाव आयोग ने मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की ओर से आंखें मूंद लीं, जिसे प्रधानमंत्री ने मतदान की तारीखों की घोषणा से 10 दिन पहले शुरू किया था। 10,000 रुपए का हस्तांतरण घोषणा से पहले शुरू किया गया था और चुनाव प्रचार के दौरान जारी रहा। चुनाव आयोग ने इसे किसी भी स्तर पर नहीं रोका। यह धन हस्तांतरण मतदाताओं को एक जबरदस्त रिश्वत थी। मुझे इस बात की ज्यादा चिंता है कि अगले 5 सालों में राज्य सरकार को उसके वादों और जवाबदेही के लिए कौन जिम्मेदार ठहराएगा। दुर्भाग्य से, बिहार के लोगों ने राज्य विधानसभा में एक मजबूत विपक्ष के लिए वोट नहीं दिया और इससे जिम्मेदारी फिर से लोगों पर ही आ जाती है।

असम विधानसभा चुनावों से पहले भाजपा-विरोधी मोर्चा बनाने में जुटी कांग्रेस

2026 में होने वाले असम विधानसभा चुनावों से पहले, कांग्रेस की असम इकाई और 7 अन्य राजनीतिक दलों ने राज्य में भाजपा-विरोधी मोर्चा बनाने के मुद्दे पर सहयोग किया है। यह निर्णय कांग्रेस द्वारा बुलाई गई एक बैठक के दौरान लिया गया, जिसमें रायजोर दल, असम जातीय परिषद, आंचलिक गण मोर्चा, सी.पी.एम., सी.पी.आई., सी.पी.आई. (एम.एल.) और ए. पी. एच. एल. सी. के नेता शामिल हुए। ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट विशेष रूप से अनुपस्थित रहा। ए.आई.सी.सी. महासचिव जितेंद्र सिंह ने कहा कि विपक्षी ताकतें हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व वाली सरकार के अन्याय के खिलाफ एकजुट हुई हैं और राज्य में एक नई जन सरकार बनाने का संकल्प लिया है। हालांकि, मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने इस घटनाक्रम को कमतर आंकने की कोशिश की। महाराष्ट्र कांग्रेस ने स्थानीय निकाय चुनावों के लिए छोटे दलों के साथ गठबंधन करने का फैसला किया। महाराष्ट्र कांग्रेस ने आगामी स्थानीय निकाय चुनावों के लिए सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन को छोड़कर, छोटे और समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन करने का फैसला किया है। कांग्रेस लगातार यह दावा कर रही है कि महा विकास अघाड़ी (एम.वी.ए.) के उसके प्रमुख सहयोगियों शिवसेना (यू.बी.टी.) और एन.सी.पी. (एस.पी.) के साथ उसका गठबंधन बरकरार है। कांग्रेस के एक सूत्र ने कहा कि पार्टी के जिला और ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों को सहयोगियों से परामर्श के बाद गठबंधन पर निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया गया है और उनके निर्णयों का सम्मान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि नेताओं के पास राज्य-स्तरीय व्यापक गठबंधन की बजाय क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार रणनीतिक समझ है और बेहतर होगा कि वे इसे अपनाएं। एम.वी.ए. सहयोगियों की संयुक्त बैठक, जिसमें समन्वय समिति की घोषणा की गई, में महाराष्ट्र कांग्रेस प्रमुख हर्षवर्धन सपकाल, एन.सी.पी. (एस.पी.) के प्रदेश अध्यक्ष शशिकांत शिंदे और शिवसेना (यू.बी.टी.)के एम.एल.सी. अनिल परब सहित अन्य पार्टी नेता शामिल हुए। समन्वय समिति में गठबंधन के प्रत्येक सदस्य के प्रतिनिधि शामिल होंगे और उम्मीदवारों को लेकर मतभेदों को सुलझाएंगे। हालांकि, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) महा विकास अघाड़ी गठबंधन का हिस्सा होगी या नहीं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने कहा कि मनसे को एम.वी.ए. में नए सहयोगी के रूप में शामिल करने का कोई औपचारिक प्रस्ताव नहीं है। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव बी.एल.संतोष की बंद कमरे में भाजपा विधायकों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक- भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव बी.एल.संतोष ने पूर्वोत्तर समन्वयक संबित पात्रा के साथ इंफाल स्थित पार्टी के राज्य मुख्यालय में भाजपा विधायकों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। बंद कमरे में हुई इस बैठक में पहाड़ी और घाटी दोनों क्षेत्रों के भाजपा विधायकों ने भाग लिया, जिनमें पूर्व मुख्यमंत्री एन.बीरेन सिंह, विधानसभा अध्यक्ष सत्यव्रत सिंह और राज्यसभा सांसद लीशेम्बा सनाजाओबा शामिल थे।

बीज मसौदा विधेयक, 2025- भारतीय कृषि में गुणवत्ता, अधिकार और पारदर्शिता का नया युग

भारत एक कृषि प्रधान देश है,जहाँ कृषि न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन की आधारशिला भी है। इस विशाल कृषि व्यवस्था की आत्मा बीज है, क्योंकि बीज ही वह पहला तत्व है जिससे उत्पादन, नवाचार और खाद्य सुरक्षा की पूरी श्रृंखला आरंभ होती है। इसी बीज क्षेत्र में सुधार और पारदर्शिता लाने की दिशा में सरकार ने वर्ष 2025 में बीज मसौदा विधेयक, 2025 का प्रस्ताव तैयार किया है और इस पर 11 दिसंबर, 2025 तक नागरिकों, किसानों, वैज्ञानिकों, बीज उत्पादकों और अन्य हितधारकों से सुझाव आमंत्रित किए हैं। यह मसौदा विधेयक न केवल कृषि सुधारों के अगले चरण का संकेत है, बल्कि यह देश में क्वालिटी सीड गवर्नेंस का एक नया ढांचा भी प्रस्तुत करता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत ने वर्ष 2025 में बीज मसौदा विधेयक, 2025 का प्रारूप जारी कर एक ऐसा विधायी प्रयास शुरू किया है, जो न केवल देश के कृषि तंत्र को आधुनिकता, पारदर्शिता और गुणवत्ता के उच्चतम मानकों से जोड़ता है, बल्कि बीजों की सुरक्षा, किसानों के अधिकारों और कृषि-व्यवसाय के नैतिक ढाँचे को भी नई दिशा प्रदान करता है।

यह विधेयक 1966 के बीज अधिनियम और 1983 के बीज नियंत्रण आदेश का स्थान लेने जा रहा है, जो कि आज की तकनीक- संचालित कृषि आवश्यकताओं के सामने अपर्याप्त हो चुके हैं। बदलते जलवायु-परिस्थितियों, बीजों में जैव- प्रौद्योगिकी के बढ़ते हस्तक्षेप और वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा के दबाव ने इस नए विधेयक की आवश्यकता को और अधिक सशक्त बनाया है। यह प्रस्ताव इस बात का प्रमाण है कि भारत कृषि क्षेत्र को विश्वस्तरीय बनाने और किसान-हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। साथियों बात अगर हम आज भारत वैश्विक बीज बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन चुका है,य अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य इसको समझने की करें तो, देश के बीज निर्यात का मूल्य अरबों डॉलर तक पहुँच चुका है, और निजी क्षेत्र,विशेष रूप से बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियाँ, इस उद्योग में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। बीज मसौदा विधेयक, 2025 व्यापार सुगमता (ईज़ ऑफ़ डूइंग बिजनेस) के सिद्धांत पर आधारित है।यह बीज पंजीकरण लाइसेंसिंग,परीक्षण और वितरण की प्रक्रियाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने की बात करता है। इससे छोटे उद्यमियों, स्टार्टअप्स और स्थानीय बीज उत्पादकों को भी समान अवसर मिलेगा।इसके साथ ही, यह विधेयक अवैध बीज बिक्री, फर्जी ब्रांडिंग और अनधिकृत जेनेटिक वैरायटी जैसे अपराधों के लिए कठोर दंड का प्रावधान भी करता है,जिससे बीज उद्योग में पारदर्शिता और उपभोक्ता विश्वास दोनों को बल मिलेगा।अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य-वैश्विक मानकों के अनुरूप भारतीय ढांचा,विश्व स्तर पर बीज व्यापार और नियमन यूपीओवी (इंटरनेशनल यूनियन फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ न्यू वैरायटीज ऑफ़ प्लांट्स) आईएसटीए (इंटरनेशनल सीड टेस्टिंग एसोसिएशन) और ओईसीडी (ओईसीडी सीड स्कीम्स) जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के तहत चलता है। भारत का नया बीज मसौदा विधेयक इन अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नीति ढांचा तैयार करने का प्रयास करता है ताकि भारतीय बीज उद्योग को ग्लोबल ट्रेड नेटवर्क में और गहराई से एकीकृत किया जा सके। इससे भारत न केवल घरेलू आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा, बल्कि अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के उभरते कृषि बाजारों में बीज आपूर्ति का एक स्थिर और विश्वसनीय स्रोत भी बन सकता है। साथियों बात अगर हम,किसानों के अधिकारों की रक्षा कोसमझने की करें तो,केंद्र में किसान, केवल उपभोक्ता नहीं-भारत की कृषि नीति में लंबे समय तक किसान को केवल उपभोक्ता के रूप में देखा गया,जिसे बीज खरीदना होता है।

लेकिन बीज मसौदा विधेयक, 2025 इस धारणा को बदलता है। यह किसान को हितधारक के रूप में मान्यता देता है, जिसके अधिकार, ज्ञान और सहभागिता को कानूनी ढांचे में स्थान दिया गया है।विधेयक में यह सुनिश्चित करने की दिशा में प्रावधान है कि यदि किसान को किसी बीज से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता है, तो वह बीज आपूर्तिकर्ता या निर्माता के खिलाफ कंपनसेशन क्लेम कर सकता है। यह प्रावधान कंज्यूमर प्रोटेक्शन के सिद्धांत को कृषि क्षेत्र में लागू करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।साथ ही,मसौदा किसानों को पारंपरिक बीज बचाने, पुनः प्रयोग करने और आदान-प्रदान करने के अधिकार से वंचित नहीं करता, यह भारत के विविध कृषि पारिस्थितिकी और स्वदेशी बीज संरक्षण परंपरा की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।बीज गुणवत्ता नियंत्रण,विज्ञान और जवाबदेही का संगम-बीज मसौदा विधेयक 2025 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी बीज उत्पादक, वितरक और विक्रेता को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाणन एजेंसी से अनुमोदन प्राप्त करना आवश्यक होगा। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बाजार में बिकने वाले बीज स्टैंडर्डाइज्ड हों और उनमें फसल की न्यूनतम अंकुरण दर तथा शुद्धता का स्तर निर्धारित सीमा से कम न हो।इस विधेयक के अंतर्गत नेशनल सीड अथॉरिटी तथा स्टेट सीड सर्टिफिकेशन बोर्ड्स की भूमिका को और मजबूत बनाया गया है। वे न केवल बीज परीक्षण, पंजीकरण और प्रमाणन की जिम्मेदारी निभाएंगे, बल्कि बीज उत्पादकों की जवाबदेही तय करने के लिए एक शिकायत निवारण तंत्र भी तैयार करेंगे। साथियों बात अगर हम बीज नियमन को आधुनिक बनाने की आवश्यकता को समझने की करें तो,1966 का बीज अधिनियम उस समय बनाया गया था जब भारत खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था और हरित क्रांति की शुरुआत ही हुई थी। उस दौर की कृषि तकनीक न तो आज की तरह उन्नत थी, न ही निजी बीज कंपनियों की व्यापकता इतनी बड़ी थी।

लेकिन 2025 में पहुंचते- पहुंचते परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल चुकी है,देश में 300 से अधिक पंजीकृत बीज कंपनियाँ हैं, जैव-संशोधित किस्में,हाइब्रिड वैरायटी, ड्रोन- आधारित बीज परीक्षण, और स्मार्ट फसल निगरानी जैसी तकनीकें मुख्यधारा में शामिल हो चुकी हैं। पुराना कानून गुणवत्ता परीक्षण, मानकीकरण,पारदर्शिता किसानों के अधिकारों और विपणन नियंत्रण के आधुनिक मानदंडों को पूरा नहीं कर पा रहा था।इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने बीज मसौदा विधेयक, 2025 को तैयार किया है, जो बीज नियमन को समय-सापेक्ष, वैज्ञानिक और अंतरराष्ट्रीय दिशानिर्देशों के अनुरूप बनाता है। यह विधेयक अंतरराष्ट्रीय बीज परीक्षण संघ,ओईसीडी सीड्स स्टैंडर्ड्स और एफएओ के वैश्विक कृषि सुरक्षा मानकों से भी सामंजस्य स्थापित करता है। साथियों बात अगर हम बीज मसौदा विधेयक, 2025 के मुख्य उद्देश्यों व किसानों के लिए विशेष प्रावधानों को समझने की करें तो,इस विधेयक के उद्देश्य बहुआयामी हैं, जिनमें उपभोक्ता सुरक्षा, किसान संरक्षण,वैज्ञानिक गुणवत्ता नियंत्रण,कृषिअनुसंधान को बढ़ावा और कृषि बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा शामिल है। प्रमुख उद्देश्यों में,(1)किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराना(2)बीज बाजार में नकली, मिलावटी और निम्न-स्तरीय बीजों पर नियंत्रण(3) किसानों के अधिकारों और उनके मुआवजे की गारंटी(4)बीज उत्पादकों, वितरकों और कंपनियों का अनिवार्य पंजीकरण (5) अनुसंधान व नवाचार को प्रोत्साहन (6)बीजों में जैव- सुरक्षा और जैव-विविधता की रक्षा,इन सभी उद्देश्यों का मूल यह है कि भारत की कृषि प्रणाली को भविष्य-उन्मुख और जोखिम-रहित बनाया जा सके, जिससे किसानों की आय और उत्पादन दोनों में स्थिरता आए।किसानों के लिए विशेष प्रावधान -संरक्षण, अधिकार और मुआवजा इस विधेयक का सबसे महत्वपूर्ण और प्रगतिशील पहलू किसानों के अधिकारों को मजबूत बनाना है। कृषि क्षेत्र में वर्षों से यह शिकायत थी कि बीज कंपनियों के दावे के मुताबिक उत्पादन नहीं मिलने पर किसानों को कोई मुआवजा नहीं मिलता।बीज मसौदा विधेयक 2025 में-(1)यदि बीज की गुणवत्ता में कमी पाई जाती है,(2)यदि बीज परीक्षण के मानक पूरे नहीं होते,(3)या यदि कंपनी द्वारा विज्ञापित उत्पादन प्राप्त नहीं होता,तो किसान मुआवजा पाने का पात्र होगा। इसके लिए जिला स्तर पर बीज मुआवजा समिति स्थापित करने का प्रावधान किया गया है।साथ ही किसानों को अपना बीज बचाने, उपयोग करने, अदल- बदल करने और बेचने का पूरा अधिकार होगा। बशर्ते वे ब्रांडिंग या पैकेजिंग के साथ कारोबार न करें। यह प्रावधान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसानों के अधिकारों की रक्षा करने वाले एफएओ के किसान अधिकार चार्टर और भारत के अपने पीपीवीएफआर एक्ट के अनुरूप है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने बन्सल ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, सराय पीपलथला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/[illegible])

इन्नोवेशन से बदलेगी दुनिया की सूरत-सीरत

मुरादाबाद।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा के वाइस चांसलर प्रो. टंकेश्वर कुमार ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इन्नोवेशन, सिस्टम मॉडलिंग पर बोलते हुए कहा, करीब पांच दशक की विकास यात्रा में सिस्टम मॉडलिंग भौतिक विज्ञान के संग-संग दुनिया की सभी तकनीकों में अपनी गहरी पैठ बना चुका है। यह किसी वरदान से कम नहीं है। उन्होंने इसे बहुआयामी तकनीक करार देते हुए कहा, हिंदुस्तान से अमेरिका तक का 14 घंटे का सफर महज एक घंटे में पूरा हो सकेगा। प्रो. टंकेश्वर कुमार तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के कॉलेज ऑफ कंप्यूटिंग साइंसेज एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी-सीसीएसआईटी में सिस्टम मॉडलिंग एंड एडवांसमेंट इन रिसर्च ट्रेंड्स-स्मार्ट-2025 पर दो दिनी इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के शुभारम्भ मौके पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इससे पूर्व मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन

तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी में सिस्टम मॉडलिंग एंड एडवांसमेंट इन रिसर्च ट्रेंड्स- स्मार्ट- 2025 पर दो दिनी इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का आगाज़

के संग ऑडी में 14वीं इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस- स्मार्ट- 2025 का शंखनाद हुआ। इस मौके पर प्रो. टंकेश्वर कुमार बतौर मुख्य अतिथि, आईआईटी रूड़की के रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ. अरूण के. सराफ और आईआईटी कानपुर के प्रो. जे. रामकुमार बतौर गेस्ट ऑफ ऑनर, आईईटी जीएलए यूनिवर्सिटी के डीन प्रो. दिलीप के. शर्मा, माता वैष्णो देवी यूनिवर्सिटी, कटरा में स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के प्रो. मनोज कुमार

गुप्ता बतौर की-नोट स्पीकर, वाइस चांसलर प्रो. वीके जैन, डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन, फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग के डीन एवम् कॉन्फ्रेंस जनरल चेयर प्रो. आरके द्विवेदी की गरिमामयी मौजूदगी रही। वाइस चांसलर प्रो. टंकेश्वर कुमार बोले, नई टेक्नोलॉजी विशेषकर एआई ने हमारे सोचने के तौर-तरीके बदल दिए हैं। अब पहले हमारे पास सवालों से अधिक जवाब के प्लेटफॉर्म्स हैं।

वास्तव में इन्नोवेशन डवलपमेंट का इंजन है। इसकी वजह से पुरानी चीजों की विदाई हो रही है और तेजी से नई तकनीकों का स्वागत हो रहा है। मोबाइल का उदाहरण देते हुए कहा, तकनीकी एडवांसमेंट की बदौलत डिवाइसेज़ का उपयोग बहुउपयोगी हो गया है। इससे पूर्व सभी अतिथियों का बुके देकर गर्मजोशी से स्वागत और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। शुभारम्भ सत्र में कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग का विमोचन भी हुआ। टीएमयू के वाइस चांसलर प्रो. वीके जैन ने बेसिक्स को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा, प्रोग्रामिंग लैंग्वेज बदलती रहती है, लेकिन बेसिक्स वहीं रहते हैं। उन्होंने स्टुडेंट्स को अलर्ट करते हुए कहा, एआई का प्रयोग सावधानीपूर्वक और स्मार्टली करना चाहिए। जीवन की सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं है। डीन एकेडमिक्स प्रो. मंजुला जैन बोलीं, समाज में बदलाव के लिए सोच और शोध जरूरी है। लगन से ही ज्ञान का दीपक जलता है।

फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग के डीन एवम् कॉन्फ्रेंस जनरल चेयर प्रो. आरके द्विवेदी स्मार्ट कॉन्फ्रेंस की थीम प्रस्तुत करते हुए बोले, तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी शोध को लेकर बेहद संजीदा है। टीएमयू वैश्विक मानकों पर ही शोध को परखती है। बोले, इस बार स्मार्ट में करीब 550 से अधिक रिसर्च पेपर प्रस्तुति के लिए आए, लेकिन निर्णायक मंडल ने 98 रिसर्च पेपर को प्रस्तुति के लिए मान्यता दी। उन्होंने यूनिवर्सिटी के आदर्श वाक्य- सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र को अपनाने पर जोर दिया।

स्मार्ट- 2025 में प्रो. हरबंश दीक्षित, प्रो. एसके सिंह, प्रो. एमपी सिंह, प्रो. अनुराग वर्मा, प्रो. पीके जैन, डॉ. ज्योति पुरी, डॉ. अलका अग्रवाल, प्रो. पंकज कुमार सिंह, प्रो. आशेन्द्र कुमार सक्सेना, डॉ. शंभु भारद्वाज, डॉ. प्रदीप गुप्ता, डॉ. शालिनी निनोरिया, श्री प्रदीप गुप्ता, श्री नवनीत विश्नोई, डॉ. संदीप वर्मा, डॉ. रूपल गुप्ता, डॉ. नमित गुप्ता, श्री मोहन विशाल गुप्ता, श्री ज्योति रंजन लाभ, श्री मनीष तिवारी, श्री अजय रस्तोगी, डॉ. रंजना शर्मा, श्री हरजिंदर सिंह, श्री ब्रह्मदत्त गौड़ आदि की मौजूदगी रही। कॉन्फ्रेंस का समापन राष्ट्रगान के संग हुआ। संचालन स्टुडेंट्स- मिसबा तैयब, प्रत्यक्षा, गौरवी प्रजापति ने किया।

मिशन शक्ति के तहत बहू- बेटी सम्मेलन का हुआ आयोजन

बहराइच। मिशन शक्ति फेज 5.0 के तहत थाना कैसरगंज की मिशन शक्ति टीम द्वारा भखरौली लोनियन पुरवा कैसरगंज मे बहू-बेटी सम्मेलन कर महिलाओं व बच्चियों को उच्चाधिकारी द्वारा दिए गये।आदेशो निर्देशों के क्रम मे तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकरी योजना के बारे मे व बालिकाओं से उनकी समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए महिलाओं पर हो रहे अपराध के प्रति उन्हें जागरूक किया गया और बच्चियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया तथा महिला संबंधी घटित अपराध की शिकायत के लिए टोल फ्री नंबर 1090 ,1098 ,1076, 112 ,181, 108 आदि व साइबर संबंधित अपराध के शिकायत के लिए टोल फ्री नंबर 1930 की जानकारी दी गई तथा सरकारी योजनाएं जैसे कन्या सुमंगला योजना, ,मातृ वंदना योजना,वृद्धा पेंशन योजना, मानव तस्करी,बाल विवाह के खिलाफ शपथ कराई गई व बालिकाओं से उनकी समस्याओं के बारे में पूछताछ करते हुए जानकारी दी गयी। इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक बृजेन्द्र कुमार मिश्र व मिशन शक्ति टीम उप निरीक्षक बाबूलाल विश्वकर्मा म0उपनिरीक्षक रागिनी वर्मा, म0आ0- गायत्री शुक्ला एवं आ0 सूर्यकांत पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

गोसौरा खुर्द में सम्राट अशोक लाट स्व जगन्नाथ कुशवाहा की मूर्ति का भव्य अनावरण

मेजा प्रयागराज।

मेजा क्षेत्र के उरुवा अंतर्गत गोसौरा खुर्द गांव में रविवार को धर्म, इतिहास और सामाजिक जागरूकता का अद्भुत संगम देखने को मिला। यहां सम्राट अशोक के भव्य लाट (स्तंभ) का अनावरण बड़े ही शालीन और सांस्कृतिक माहौल में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण रहे मेजा के लोकप्रिय विधायक संदीप पटेल, जिन्होंने विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचकर इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बने। उनके साथ पूर्व लोकसभा प्रत्याशी अमरनाथ मौर्या ने भी शामिल होकर सम्राट अशोक के लाट पर माल्यार्पण किया और लोगों को सामाजिक एकता तथा बौद्ध विचारधारा के महत्व पर प्रेरित किया। अनावरण समारोह के दौरान विधायक संदीप पटेल ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि सम्राट अशोक का इतिहास केवल भारतीय संस्कृति की पहचान नहीं, बल्कि करुणा, शांति और मानवता का संदेश देने वाला महान आदर्श है।

उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद बड़ी संख्या में ग्रामीणों के बीच क्षेत्र की समस्याओं को भी गंभीरता से उठाया। उन्होंने कहा कि मेजा विधानसभा क्षेत्र में सड़क, स्वास्थ्य, सिंचाई और शिक्षा जैसी कई बुनियादी जरूरतों पर लगातार कार्य किया जा रहा है। उन्होंने लोगों से संवाद करते हुए बताया कि स्ड़कके माध्यम से क्षेत्र में विकास कार्यों को गति देने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। विधायक ने साफ कहा कि जनता की समस्याएं उनकी प्राथमिकता हैं, और जिस भी गांव, कस्बे या इलाके से शिकायतें आ रही हैं, उन्हें दूर करने के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया जा रहा है। कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित लोगों ने भी विधायक के समक्ष अपनी स्थानीय शिकायतें और सुझाव रखे, जिन पर उन्होंने सकारात्मक आश्वासन दिया। अनावरण कार्यक्रम के आयोजन में बबलू कुशवाहा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने अपने समाज के लोगों को संबोधित करते हुए बौद्ध धर्म की शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि बुद्ध के सिद्धांत–अहिंसा,

पूर्वजों की याद से मिलती है एनर्जी- बबलू कुशवाहा

समानता, सत्य और करुणा–आज भी समाज को एकजुट रखने की शक्ति रखते हैं। बबलू कुशवाहा ने युवाओं से अपील की कि वे अपने इतिहास, संस्कृति और अपनी जड़ों को समझें, तभी समाज में जागरूकता और विकास दोनों संभव हैं। ग्रामीणों द्वारा इस कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि सम्राट अशोक लाट का अनावरण गांव के लिए इतिहासिक महत्व का दिन है। इससे न सिर्फ गांव का गौरव बढ़ेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी अपने इतिहास, संस्कृति और बौद्ध धरोहर के प्रति प्रेरणा मिलेगी। अंत में कार्यक्रम का समापन जय-जयकार, माल्यार्पण और सांस्कृतिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। ग्रामीणों ने इस आयोजन को यादगार बताते हुए आयोजकों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

ग्रीन कान्हा रन में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक की रही भागीदारी

मुरादाबाद।

हार्टफुलनेस मेडिटेशन केन्द्र द्वारा ग्रीन कान्हा रन का आयोजन मझोला थाना के सामने किया गया। जोनल कॉर्डिनेटर डॉ नवीन कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर प्रतिभागियों को रवाना किया। ग्रीन कान्हा रन में सभी उम्र के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया जिसमें 92 वर्षीय नौबतसिंह और 4 वर्षीय कुमारी परी सबसे कम उम्र ने भी ग्रीन कान्हा रन में प्रतिभाग किया। हार्टफुलनेस मेडिटेशन केन्द्र मुरादाबाद के जोनल कॉर्डिनेटर डॉ नवीन कुमार सिंह ने बताया कि क्लाइमेट परिवर्तन और कार्बन फुटप्रिंट की चर्चा वाले इस दौर में ग्रीन हार्टफुलनेस रन एक अत्यंत विचारशील और जलवायु-सचेत दौड़ होगी। इस दौड़ के रजिस्ट्रेशन से प्राप्त समस्त आय 'फॉरेस्ट्स बाय हार्टफुलनेस' – हार्टफुलनेस संस्थान की एक पहल – को दी जाएगी। जिसका उद्देश्य भारत की प्रकृति , धरती, पर्यावरण ,देशज एवं लुप्तप्राय वृक्ष प्रजातियों का पोषण , संरक्षण और संवर्धन करना है। ग्रीन कान्हा रन के संयोजक अमित सक्सेना ने कहा कि यह हार्टफुलनेस मेडिटेशन संस्था

द्वारा पिछले कई वर्षों से पूरे भारतवर्ष में ग्रीन कान्हा दौड़ कराई जा रही है। इसमें स्वस्थ शरीर , स्वस्थ धरती , स्वस्थ प्रकृति, वृक्षारोपण के द्वारा पृथ्वी को हरा-भरा कर पर्यावरण बचाओ उद्देश्य रहा है। प्रो डॉ साधना सिंह ने ग्रीन कान्हा रन की महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमारे मानसिक ,शारीरिक , आध्यात्मिक , स्वास्थ्य , प्रकृति पर्यावरण के लिए आवश्यक है। डाक्टर अंकित वर्मा , रीजनल यूथ फेसिलिटेटर, उत्तर प्रदेश ने कहा कि यह संपूर्ण भारत वर्ष में एक समय एक साथ ग्रीन कान्हा रन आयोजित की जा रही है।यह रन फॉरेस्ट बाइ हार्टफुलनेस, द्वारा संचालित है,जो अब तक 22000 वृक्ष भारत वर्ष मे लगा चुके है, इसका मुख्य उद्देश्य यूथ को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मुरादाबाद केंद्र पर लगभग 110 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। डॉ अतुल विश्नोई ने कहा कि सुबह 8 बजे से ही सभी भाई बहन ग्रीन कान्हा रन में प्रतिभाग करने के लिए उत्सुक थे। ऐसे कार्यक्रम स्वास्थ्य ,प्रकृति , धरती , पर्यावरण के प्रति सकारात्मक रूप कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। दौड़ में सभी उम्र के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। प्रकृति सेवा समिति ट्रस्ट रजि. मुरादाबाद के संस्थापक/ महासचिव पर्यावरण सचेतक नैपालसिंह पाल ने कहा कि प्रकृति ,पर्यावरण जागरूकता , संरक्षण और संवर्धन हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है अतः हम सभी को मिलकर अपनी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। ग्रीन कान्हा रन का मुख्य उद्देश्य हमारे ग्रह और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित करना है। ध्यान प्रशिक्षक आदर्श श्रीवास्तव जी ने कहा कि सभी धार्मिक , सामाजिक संगठनों को भी ऐसे कार्यक्रम में शामिल होने चाहिए और समाज को सकारात्मक ऊर्जा और नवीन ऊर्जा के साथ बदलाव का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर डॉ साधना सिंह , रश्मि नारंग , उदयभान चौहान , कपिल चड्ढा , करन चड्ढा, लव सक्सेना , नवीन दिवाकर , विवेक यादव , विनीत शर्मा , राजकुमार गौतम , बेबीराज , डॉ मुकेश कुमार , डॉ आर के शर्मा , देशराज सिंह ,पर्यावरण प्रेमी हरि वल्लभ देवरानी , गजेन्द्र सिंह , विनोद कुमार , हुकुम सिंह राणा के साथ साथ प्रकृति सेवा समिति ट्रस्ट रजि. की अध्यक्षा पर्यावरण प्रेमी रविता पाल , सचिव राजपाल सिंह , सदस्य एस. के. दीक्षित, रामगोपाल सहित स्थानीय निवासी , पर्यावरण प्रेमी , प्रकृति प्रेमी , पर्यावरण मित्र उपस्थित रहे।

भगवान श्री चित्रगुप्त मूर्ति स्थापना में उमड़ा कायस्थ समाज

बहराइच। शहर के नवागढ़ी घसियारीपुरा में रविवार को श्री नव दुर्गा मंदिर परिसर में भगवान श्री चित्रगुप्त भगवान के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम विधि विधान से सम्पन्न किया गया ।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सदर विधायिका अनुपमा जायसवाल रही,वही विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक मुकेश श्रीवास्तव रहे। श्री चित्रगुप्त भगवान की मूर्ति स्थापना कार्यक्रम में कायस्थ समाज के गणमान्य लोग मौजूद रहेास्थापना कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सदर विधायिका अनुपमा जायसवाल ने कहा कि भगवान श्री चित्रगुप्त जी कर्मो का लेखा जोखा रखने वाले हैाकायस्थ समाज का इतिहास बहुत पुराना है। कायस्थ समाज के इष्ट देव श्री चित्रगुप्त भगवान की मूर्ति स्थापना से शहर सहित जनपद के कायस्थ जन दर्शन के लिए मन्दिर आएंगे।विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक मुकेश श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान श्री चित्रगुप्त जी हम सबके आराध्य है।भगवान श्री चित्रगुप्त जी की नई मूर्ति स्थापना से कायस्थ जनों मे एक नई ऊर्जा का संचार होगा।कार्यक्रम संयोजक द्वय गौरव वर्मा एवं अभिनव श्रीवास्तव ने आये हुए गणमान्य जनों को पटका पहनाकर स्वागत अभिनन्दन किया।इस दौरान पूर्व सभासद संतोष श्रीवास्तव, देवेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, कुलदीप सिन्हा,श्रवण निगम,डॉ. राहुल मोहन,महेंद्र पाल श्रीवास्तव, डॉ. भूपराज श्रीवास्तव,रवि नन्दन श्रीवास्तव, डॉ.विनय श्रीवास्तव, डॉ.आनंद श्रीवास्तव,सचिन श्रीवास्तव, पंकज श्रीवास्तव, अनुज श्रीवास्तव,शशांक सिन्हा, नीरज श्रीवास्तव, मनीष चाटिया,संजय श्रीवास्तव, प्रशांत श्रीवास्तव,शिवेंद्र नाथ श्रीवास्तव, आनंद श्रीवास्तव, सौरभ श्रीवास्तव, शेखर श्रीवास्तव, शिवम श्रीवास्तव, रवि श्रीवास्तव, आशीष गौरव श्रीवास्तव, अमित श्रीवास्तव, मुरारी श्रीवास्तव, जय प्रकाश सक्सेना,कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, दीपू श्रीवास्तव, शिवम श्रीवास्तव, लव निगम,केशरी नाथ श्रीवास्तव, अनिमेष श्रीवास्तव, आकाश श्रीवास्तव, अभिषेक श्रीवास्तव,उत्तम श्रीवास्तव,ई. राधेश्याम श्रीवास्तव,प्रखर श्रीवास्तव, प्रभात श्रीवास्तव, अवनीश श्रीवास्तव, नीरज श्रीवास्तव, ज्योति प्रकाश श्रीवास्तव,लोकेश श्रीवास्तव,मनोज श्रीवास्तव, अक्लू श्रीवास्तव, रीति मुरारी,हेमा निगम,मंजू श्रीवास्तव, गीतिका नाथ श्रीवास्तव सहित सैकड़ों की संख्या में कायस्थ समाज के लोग मौजूद रहे।

मुजम्मिल के मोबाइल से बड़ा खुलासा: एक दर्जन से यादा डॉक्टरों की तलाश, लिस्ट की गई तैयार; जैश से जुड़े तार

नई दिल्ली । लाल किला के सामने बम धमाके के मामले में जांच एजेंसियां कई डॉक्टरों के मोबाइल फोन और सीडीआर से जुड़े नेटवर्क का पता लगा रही हैं। नूंह और फरीदाबाद से कई डॉक्टरों को पकड़ा गया है। सूत्रों के हवाले से पता चला है कि विस्फोट के बाद से 12 से अधिक डॉक्टरों के फोन नंबर बंद हैं, जिन्हें जांच एजेंसियां ट्रेस करने की कोशिश कर रही हैं। सूत्रों के मुताबिक इनमें से अधिकतर अल फलाह यूनिवर्सिटी से जुड़े हैं। बम धमाके के मामले में जांच एजेंसियों को बड़ा सुराग मिला है। गिरफ्तार संदिग्ध डॉक्टरों के साथ डॉक्टर मुजम्मिल के मोबाइल फोन की कॉल डिटेल रिकॉर्ड यानी कि सीडीआर से एक बड़े नेटवर्क का खुलासा हुआ है। सूत्रों के अनुसार एजेंसियों ने डॉक्टरों की एक लंबी लिस्ट तैयार की है। इसमें अल फलाह यूनिवर्सिटी से पढ़े और वहां काम करने वाले डॉक्टरों की संख्या यादा है। इनमें से कई डॉक्टरों के फोन उमर के बम धमाके के बाद से बंद हैं। सूत्र बताते हैं कि करीब एक दर्जन से यादा डॉक्टरों की तलाश की जा रही है, जो जैश से जुड़े इन संदिग्धों के संपर्क में थे। डॉ. शाहीन के फोन से जांच एजेंसियों को कई सबूत मिले हैं। अल फलाह यूनिवर्सिटी की जमीन की भी प्रशासन ने गहन जांच शुरू कर दी है। इस मामले में फरीदाबाद पुलिस की सीआईए ने यूनिवर्सिटी के मालिक व ट्रस्ट कार्यालय में जाकर कागज पत्रों की जांच की। यहां पर अल फलाह यूनिवर्सिटी के मालिक जावेद अहमद सिद्दीकी रहते हैं और चैरिट्रेबल ट्रस्ट का कार्यालय भी यहीं हैं। फिरोजपुर झिरका से डॉ. मोहम्मद, नूंह शहर से डॉक्टर रिहान और पुन्हाना के सुनहेड़ा गांव से डॉ. मुस्तकीम को एक दिन पहले पुलिस ने पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था उन्हें देर रात

गिरफ्तार कर लिया गया। जानकारी के मुताबिक, मोहम्मद 15 नवंबर को अल फलाह यूनिवर्सिटी में ड्यूटी जॉइन करने वाला था लेकिन उससे पहले दिल्ली में ब्लास्ट हो गया।

इन नारों से डॉक्टरों का किया ब्रेनवॉश

कश्मीर बनेगा दारुल इस्लाम (कश्मीर इस्लाम का घर बनेगा) और शरीयत या शहादत के दो नारों से अल फलाह यूनिवर्सिटी के डॉक्टरों, स्टॉफ व छात्रों का ब्रेनवॉश किया जा रहा था। ये नारे आतंकी संगठन अंसर गजावत-उल-हिंद के हैं। पाकिस्तान में बैठे हैंडलर इन्हीं नारों के जरिये दिल्ली के नजदीक बनी अल फलाह यूनिवर्सिटी से ही राजधानी व आस-पास के हिस्सों को दहलाने की साजिश रच रहे हैं। पाकिस्तानी हैंडलर ये नारे डॉ. मुजमिल, डॉ. उमर व इनके अन्य साथियों को बताते थे। इसके बाद ये सभी डॉक्टर मिलकर आगे स्टॉफ व छात्रों को भी इसी के जरिये बरगलाने का काम करते थे। जांच एजेंसी के आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि आतंकी संगठन की ओर से इन नारों में खास तौर पर कश्मीर का जिक्र किया गया। ऐसा इसलिए किया गया कि कश्मीर के मूल निवासी इन डॉक्टरों को इनके कश्मीर के बारे में बातें करके ही बरगलाया जा सकता है। इसी के चलते सबसे पहले डॉ. शाहीन, फिर डॉ. मुजमिल और बाद में डॉ. उमर से आतंकियों व पाकिस्तानी हैंडलर ने संपर्क किया। इनमें वर्तमान में पाकिस्तानी हैंडलर की सबसे खास कड़ी डॉ. मुजमिल ही था। इसके चलते उसे ही रुपये पहुंचाए जाते थे। इसके अलावा विस्फोटक खरीदकर जमा करने की जिम्मेदारी भी उसे ही दी गई थी। उसने ही अपने दो ठिकानों पर ये विस्फोटक छुपाया था। डॉ. मुजमिल के 30 अक्तूबर को गिरफ्तार होने के बाद पाकिस्तानी हैंडलर का सीधा संपर्क डॉ. उमर के साथ हो गया। डॉ. उमर ने अपना मोबाइल तुरंत बंद कर दिया था। वो सोशल मीडिया के जरिये पाकिस्तानी हैंडलर से लगातार बात कर रहा था। इस दौरान लगभग 10 दिनों तक पाकिस्तानी हैंडलर ने उसे कश्मीर के लिए शरीयत या शहादत के नारे के जरिये ब्रेनवॉश किया। जांच एजेंसी के सूत्रों की मानें तो हर दिन डॉ. उमर और पाकिस्तानी हैंडलर की कई-कई बार वीडियो कॉल पर बात हुई। इससे वो इतना अधिक उग्र हो गया कि 10 नवंबर को दिल्ली के लाल किले के पास जाकर बम धमाका कर दिया और अपनी जान भी गंवा बैठा।

रामलीला मैदान के अवैध ढांचे को हटाया जाए, दिल्ली हाई कोर्ट ने एमसीडी और पीडब्ल्यूडी को दिया कार्रवाई का निर्देश

नई दिल्ली। तुर्कमान गेट के पास रामलीला मैदान में सड़क, फुटपाथ, बरात घर, पार्किंग स्थल और एक निजी डायग्नोस्टिक सेंटर सहित अन्य अतिक्रमण हटाने का दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) व लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने निर्देश दिया है। तीन महीने में अतिक्रमण को हटाने का समय देते हुए मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने एमसीडी और पीडब्ल्यूडी को कार्रवाई से प्रभावित होने पक्षों को सुनवाई का अवसर प्रदान करने का भी आदेश दिया। अदालत ने कहा कि पीडब्ल्यूडी उचित कार्रवाई शुरू करे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सड़क और फुटपाथ को किसी भी तरह के अतिक्रमण से मुक्त कर दिया जाए। साथ ही अतिक्रमण की भूमि पर संचालित हो रहे बरात घर और पार्किंग के साथ ही निजी डायग्नोस्टिक सेंटर को हटाने की कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

अदालत ने उक्त निदेश पंजीकृत ट्रस्ट सेव इंडिया फाउंडेशन द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। ट्रस्ट ने एमसीडी, डीडीए, पीडब्ल्यूडी, भूमि एवं विकास कार्यालय (एल एंड डीओ), केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय, राजस्व विभाग और पुलिस अधिकारियों द्वारा अक्टूबर 2025 में किए गए एक संयुक्त सर्वेक्षण के आधार पर कुछ अतिक्रमणों को हटाने की मांग की थी।

संयुक्त सर्वेक्षण रिपोर्ट (जेएसआर) में पीडब्ल्यूडी की सड़क और फुटपाथ पर 2,512 वर्ग फुट और एमसीडी की जमीन पर 36,248 वर्ग फुट अतिक्रमण दर्ज किया गया है। इसमें कहा गया कि एक बरात घर, पार्किंग स्थल और एक निजी डायग्नोस्टिक सेंटर अतिक्रमण की भूमि पर चल रहे हैं। सर्वे में यह भी कहा गया कि एक मस्जिद और एक कब्रिस्तान ने 7,343 वर्ग फुट जमीन पर कब्जा कर रखा है, लेकिन एलएंडडीओ ने इस हिस्से को एमसीडी को हस्तांतरित नहीं किया है। ट्रस्ट ने कहा कि कई शिकायतों के बावजूद अधिकारियों की तरफ से कोई कार्रवाई नहीं की गई और अतिक्रमित भूमि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र होने के कारण एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अदालत ने मस्जिद और कब्रिस्तान वाले 7,343 वर्ग फुट क्षेत्र के संबंध में कोई निर्देश नहीं दिया। अदालत ने कहा कि जहां तक मस्जिद और कब्रिस्तान के अस्तित्व का सवाल है, यह भूमि एल एंड डीओ की है और इसलिए इस संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी उसके अधिकारियों की है। एमसीडी और एल एंड डीओ के बीच उक्त भूमि को लेकर विवाद है, जिसे उक्त विभागों के अधिकारियों के बीच सुलझा लिया जाएगा।

दिल्ली में दो युवकों की हत्या: सिगरेट विवाद और लड़की से दोस्ती बनी खून-खराबे की वजह, चाकू से वार कर ली जान

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में शुक्रवार रात में दो युवकों की चाकू से वारकर हत्या कर दी गई। न्यू उस्मानपुर इलाके में जहां सिगरेट पीने को लेकर हुए विवाद हुआ था, वहीं गोविंदपुरी इलाके में एक लड़की से दोस्ती को लेकर हुए विवाद में वारदात को अंजाम दिया गया। दोनों मामलों में पुलिस ने दो नाबालिग समेत चार आरोपियों को दबोच लिया है। न्यू उस्मानपुर में हत्या के मामले में पकड़े गए आरोपी की पहचान समीर के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों के पास से वारदात में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया है। वहीं गोविंदपुरी हत्या के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी अमर उर्फ बुद्धा (19) को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस उपायुक्त आशीष मिश्रा ने बताया कि एफ-ब्लॉक, ब्रह्मपुरी निवासी मोहित मोहित ग्रीन पार्क स्थित एक निजी कंपनी में नौकरी करता था। शुक्रवार शाम वह अपने दोस्त शिब्बू के साथ गली में मौजूद था। इस बीच किसी का काम आने पर दोनों दोस्त न्यू उस्मानपुर की भगत सिंह कालोनी पहुंचे। वहां आरोपी समीर दो नाबालिग लड़कों के साथ मौजूद था। शिब्बू सिगरेट पी रहा था। इस दौरान 15 साल का नाबालिग उससे सिगरेट फेंकने के लिए कहने लगा। मना करने पर झगड़ा हो गया। 15 साल के नाबालिग ने चाकू निकालकर मोहित को चाकू से वारकर घायल कर दिया। अस्पताल ले जाने पर उसे मृत घोषित कर दिया गया। दूसरे मामले में ओखला फेस-1 की झुग्गी निवासी रोशन शुक्रवार को काम से आने के बाद घर पर मौजूद था। इस बीच करीब आठ बजे उसके मोबाइल पर किसी की कॉल आई। रोशन गोविंदपुरी के प्रवासी एकता पार्क कैंप पहुंचा। वहां पर चार-पांच आरोपियों से उसकी कहासुनी होने लगी। इस बीच एक युवक ने चाकू निकालकर उसका गला रेत दिया। दूसरे ने उसके पेट में वार कर दिया। बाद में आरोपी भाग गए। पुलिस ने रोशन को एम्स ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। शुरुआती जांच के दौरान लड़की को लेकर हुए विवाद की बात सामने आई है।

6 एंटी स्मॉग गन करेंगी प्रदूषण पर वार, आनंद विहार बस अड्डे के लिए व्यवस्था, खर्च होंगे 58 लाख

नई दिल्ली। राजधानी के सबसे व्यस्त आनंद विहार बस अड्डे पर प्रदूषण से जंग के लिए छह एंटी स्मॉग गन तैनात की जाएंगी।

इसके लिए ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डीटीआईडीसी) की ओर से करीब 58 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। आनंद विहार बस अड्डा राजधानी में प्रदूषण का सबसे बड़ा हाटस्पॉट है। यहां रोजाना लाखों यात्रियों की आवाजाही होती है। एंटी स्मॉग गन लगने से लोगों को प्रदूषण से राहत मिलेगी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक, यहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) आम दिनों में हमेशा 400 के पार रहता है जो गंभीर श्रेणी है। ये स्थिति लोगों के स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। शनिवार को यहां का एक्यूआई 421 दर्ज किया गया। बीते दिनों पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने आनंद विहार का दौरा किया था। उस दौरान उन्होंने मौके पर जाकर धूल नियंत्रण, ट्रैफिक प्रबंधन और सड़क मरम्मत के कामों का जायजा लिया था। साथ ही, उन्होंने डीपीसीसी की ओर से लगाए गए एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन की कार्यप्रणाली देखी थी और अधिकारियों से रिपोर्ट भी ली थी। प्रदूषण की गंभीर स्थिति को देखते हुए शाहदरा दक्षिणी जोन ने आनंद विहार हॉटस्पॉट में प्रदूषण नियंत्रण के लिए 78 विशेष टीमें गठित की हैं। ये टीमें तीन शिफ्टों में काम करेंगी और अवैध पार्किंग, अतिक्रमण व धूल फैलाने वाले स्रोतों पर सख्त कार्रवाई करेंगी। छह स्मॉग गनों को बस अड्डे के परिसर के साथ ही आसपास के क्षेत्रों में तैनात किया जाएगा। एक स्मॉग गन में एक हजार लीटर पानी की क्षमता होगी। आनंद विहार आईएसबीटी बस अड्डे से दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के लिए रोजाना सैकड़ों बसों की आवाजाही होती है। इसमें लाखों लोग सफर करते हैं। सिर्फ उत्तर प्रदेश के लिए ही यहां से करीब 900 बसें रोजाना चलती हैं। इस दौरान यात्रियों को प्रदूषित वातावरण में इंतजार करना पड़ता है।

लाल किला मेट्रो स्टेशन के सभी गेट यात्रियों के लिए फिर से खुले, दिल्ली धमाके के बाद किए थे बंद

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास कार में हुए धमाके के बाद सुरक्षा के लिहाज से दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने कड़े कदम उठाए थे. इस घटना के बाद लाल किला मेट्रो स्टेशन को अस्थायी तौर पर बंद कर दिया गया था, जिसे अब फिर से खोल दिया गया है. डीएमआरसी की ओर से जानकारी देते हुए बताया है कि यात्रियों के लिए दिल्ली लाल किला मेट्रो स्टेशन के सभी गेट फिर से खोल दिए गए हैं. दिल्ली मेट्रो की वायलेट लाइन पर स्थित यह स्टेशन ऐतिहासिक लाल किला, जामा मस्जिद और चांदनी चौक इलाके सहित दिल्ली के कई प्रमुख स्थलों के लिए यात्रियों के लिए मुख्य है. बता दें कि बीते सोमवार (10 नवंबर) वॉयलेट लाइन पर स्थित लाल किला मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-1 के बाहर एक कार में तेज धमाका हुआ था. इस हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई है और एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए है. यह

धमाका इतना जोरदार था कि मेट्रो स्टेशन के एंट्री गेट पर लगे शीशे चकनाचूर हो गए. इस घटना के तुरंत बाद आसपास स्थित मेट्रो स्टेशनों पर भी एहतियातन कुछ समय के लिए एंट्री रोक दी गई थी. बता दें कि लाल किले के पास हुए धमाके के तुरंत बाद दिल्ली पुलिस, एनएसजी और फॉरेंसिक टीमें मौके पर पहुंचीं और क्षेत्र को घेराबंदी कर ली थी. इसके बाद दिल्ली पुलिस के कोतवाली थाने के एसएचओ ने लाल किला को बंद करने के संबंध में एएसआई को पत्र लिखा था. उन्होंने अनुरोध किया था कि लाल किले को कुछ दिनों के लिए बंद किया जाए. इस पत्र में कहा गया था कि घटनास्थल पर क्राइम सीन की जांच अभी जारी है और सुरक्षा कारणों से परिसर को अस्थायी रूप से बंद रखना आवश्यक है. एसएचओ के अनुरोध को स्वीकार करते हुए एएसआई ने 15 नवंबर तक लाल किले को यात्रियों के लिए बंद किया था.